Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-14, Issue-2, September-2020
www.researchguru.net

कोराना महामारी का पश्चातवर्ती गरीबी निवारण का संपोषित गांधीमार्ग मॉडल

(गुजरात के बनासकांठा विस्तार के मानवकल्याण योजना के लक्ष्यसमूह के संदर्भ में एक विश्लेषण)

विनोद बारोट, संशोधक विद्यावाचस्पति
ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केन्द्र, जरात विद्यापीठ, रांधेजा-गांधीनगर (गुजरात) 382620 E-mail: vinodbarot171@gmail.com

डॉ. लोकेश जैन, प्रोफेसर
ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केन्द्र, जरात विद्यापीठ, रांधेजा-गांधीनगर (गुजरात) 382620
lokeshcsrm@yahoo.co.in

सारांश

कोरोना महामारी ने हमारी अर्थव्यवस्था की चूलें हिली दी हैं। लोगों की समझ में आने लगा है कि जान है तो जहान है। कोरोना महामारी काल में रोजी-रोटी के लिए स्थानान्तरित लोगों ने जो व्यक्तिगत संकट, मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, परिवार से मिलन की उत्कंठा में उन तक पहुँचने की चिंता और उन तक पहुँचने की जो अकथनीय संयुक्त पीड़ा झेली है वह किसी से छिपी नहीं है। धंधे से भी गए और जिंदगी भी दाव पर लग गई, परिवार से भी विछोह हुआ, तब उस रास्ते की ओर सोचने को विवश होना पड़ रहा है जो गरीबी दूर सके, स्थानीय स्तर पर आजीविका के साधन खड़े कर सके ताकि अपनों के बीच रहकर जीविका का निर्वाह किया जा सके और कोरोना जैसी माहमारी उनके सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक व पारिवारिक परिवेश को प्रभावित न कर सके।

ग्राम स्वराज के हिमायती गांधीजी ने इस देश को सच्चे स्वराज का स्वाबलंबन का वह रास्ता दिखाया था जो उन्हें जीवन निर्वाह के साधनों के प्रति आत्मविश्वास से परिपूर्ण करता है। आज एक सदी बीत जाने पर भी देश इस रास्ते पर चलने की नितांत आवश्यकता महसूस कर रहा है जिसे माननीय प्रधानमंत्री जी ने लोकहित में आत्मसात कर आत्मनिर्भर भारत योजना का एलान किया है।

ग्रामीण गरीबी का स्थायी व सम्मानजनक समाधान शोधने के लिए गांधीजी के विचार कल तो प्रासंगिक थे ही किन्तु आज अनिवार्यता बनते जा रहे हैं इसलिए हम सभी को मिलकर विचार करना होगा। इस शोध अध्ययन में मानव कल्याण योजना के उन लक्ष्यसमूह लाभार्थियों को शामिल किया गया है जो गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले के ग्रामीण विस्तार में निवास करते हैं।

कुंजी शब्द- कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव, आजीविका का सम्पोषित मार्ग और गांधी विचार

कोरोना महामारी और गरीबी का ग्रामीण परिवेश..........

कोरोना महामारी ने आज हमें आरोग्य की दृष्टि से ही हैरान परेशान नहीं किया परन्तु आर्थिक दृष्टि से भी पायमाल बना दिया। यह स्थिति संक्रमण काल तक ही सीमित रहने वाली नहीं है अपितु इसका प्रभाव लंबे समय तक दृष्टिगोचर होगा। अर्थव्यवस्था विशेषज्ञ कह रहे हैं कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पहले से ही मंदी के दौर से गुजर रही थी किन्तु इस महामारी ने हमें कई दशक पीछे धकेल दिया है। पूँजीपति वर्ग तो आर्थिक भौतिक संसाधनों के कारण किसी न किसी तरह से स्वयं को बचा लेगा, पुनः खड़ा हो जायेगा लेकिन गरीब क्या करेगा विशेषकर जब वह मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, उद्योगों के आश्रित है। शहर तो किसी तरह बैठे हो जायेंगे लेकिन हमारी चिंता अपने ग्रामीण परिवेश के लिए अधिक हैं जहाँ 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है फिर वे हमारी भोजन अन्नादिक जीवनलक्षी आवश्यकता का विकल्परहित आधार हैं। सेवा क्षेत्र को देखें तो कई उत्पादन क्षेत्र इसी ग्रामीण क्षेत्र की असंगठित श्रमशक्ति पर निर्भर बने हुए हैं। तथापि यह कैसी करुण लाचारी है कि वे श्रमहार कर्मशील गरीबी व विपन्नता में जीवन यापन को विवश हैं विशेषकर जब हम उस विस्तार के संदर्भ में इस समस्या को देख रहे हों जो राज्य में भी खेती, व्यवसाय, संसाधन की दृष्टि से पिछड़ेपन के चरम बिन्दु पर हो।

बात मात्र कोरोना के बाद के प्रभाव से निपटने की नहीं अपितु ये गरीब इस प्रकार की परिस्थिति में भविष्य में न फंसे उसी के लिए स्थायी समाधान गांधीजी के आर्थिक (अपितु समग्र जीवनलक्षी) विचारों के आलोक में समझने की एक आनुभविक अध्ययन आधारित ईमानदारीपूर्ण संक्षिप्त पहल है।

संशोधन समस्या- गुजरात के बनासकांठा जिले के मानवकल्याण योजना के लक्ष्य समूह के गरीबों पर कोरोना महामारी का क्या पश्चातवर्ती प्रभाव पड़ेगा? यह समझने का प्रयास वर्तमान परिवेश को देखकर प्रासंगिक लगता है विशेषकर तब जब समग्र विश्व में कोरोना को लेकर हा हा कार मचा हुआ है, सुरक्षा को लेकर लॉक डाउन जैसे उपाय सरकार द्वारा किए गए हैं, स्थितियां सुधरने में काफी समय भी लग सकता है, आरोग्य की दृष्टि से संतोषजनक परिस्थिति आने पर भी आजीविका व जीवन यापन के तौर तरीकों को लेकर क्या होगा? तथा क्या इस स्थिति से निजात पाने में गांधीविचार आधारित आजीविका का मॉडल कितना कारगर सिद्ध हो सकेगा? क्या यह एक दीर्घकालिक व्यावहारिक विकल्प सिद्ध होगा? आदि समीचीन प्रश्न शोध के धरातल पर उठ खड़े हुए हैं जिन्हें गांधी विचार के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में समझना प्रासंगिक एवं अपरिहार्य है।

शोध का उद्देश्य-

1. संशोधन समस्या की विभावना के अनुरूप इस अति लघु शोध का उद्देश्य कोरोना महामारी विभीषिका की पश्चातवर्ती स्थिति का मानव कल्याण योजना के गुजरात बनासकांठा के लक्ष्य समूहों की जिंदगी और जीवन यापन के तौर तरीकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह समझना है।
2. दरिद्रनारायण के उत्थान तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ (मानवीय मूल्यों के दृष्टिकोण से लोकलक्षी तथा पर्यावरणलक्षी) बनाने गांधीजी के द्वारा बताए गए ग्राम स्वराजलक्षी चिन्तन का व्यावहारिक स्वरूप (मॉडल) क्या हो सकता है? यह समझना तथा इसकी परिणति अर्थात् परिणामों पर सापेक्ष विचार करना है।

संशोधन विस्तार का संक्षिप्त परिचय- गुजरात राज्य के पालनपुर, दांता, वडगाम, कांकरेज, वाव और थराद तालुकाओं में मानव कल्याण योजना के लक्ष्य समूहों का निवास है। भौगोलिक दृष्टि से यह बनास नदी के आसपास बसा हुआ विस्तार है जिसके उत्तर में राजस्थान, दक्षिण में महेसाणा जिला, पूर्व में साबरकांठा और पश्चिम में कच्छ जिला है जिसकी सरहदें पाकिस्तान को छूती हैं प्राकृतिक दृष्टि से जगत प्रसिद्ध रण विस्तार (रेगिस्तान) है। उत्तर में अरावली की पहाड़ियां और जंगल है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती और पशुपालन है। ऐसे तो समूचा जिला पानी की समस्या से ग्रसित है किन्तु थराद व वाव तालुका में समस्या विकट है। सरकार द्वारा जलसंचय के काम जैसे- चेकडेम निर्माण, बोरीबंध, खेत तलाब, सूक्ष्म सिंचाई हेतु ड्रिप आदि के कार्य किए जा रहे हैं जो लोगों के साधन सुधार के साथ आजीविका के आधार भी हैं। इसके अलावा मजदूरी जीवन निर्वाह का साधन है। वाव और सुईगाम तालुकाओं का समावेश पश्चिमी रण विस्तार में होता है यहाँ बरसाती खेती ही जीवन का आधार है। बाकी के तालुका के लोग दूसरे जिलों में रोजगारी के लिए जाते हैं। विस्तार की मुख्य फसलें गेंहूँ, बाजरा, मूँगफली, आलू, कपास आदि है बागायती फसलों में भी उन्नत किस्म के प्रयोग हो रहे हैं किन्तु वे बड़े किसानों तक सीमित हैं। दांता और अमीरगढ़ तालुका पहाड़ी और आदिवासी विस्तार है अधिकतर लोग पशुपालन के साथ जुड़े हैं, आदिवासी जंगल उप-उत्पाद (लघु वन उपज-

सीताफल) आदि के जरिए अपना कुछ निर्वाह करने का प्रयास करते हैं। जीवन निर्वाह की स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती।

वर्तमान की विभीषिका को लेकर गांधीजी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता पर एक गहन चिंतन........

आज समग्र विश्व कोरोना महामारी का सामना कर रहा है जिसके कारण समूचा अर्थतंत्र वेन्टीलेटर पर है, जीवन की गति मानो थम सी गई है लेकिन गरीबों के लिए कोरोना से कहीं अधिक भुखमरी, बेरोजगारी व गरीबी से आए दिन घुट घुट कर मरना हो रहा है। उनके लिए यह लॉकडाउन इन गरीबों के लिए लोकआउट (लोगों का सिस्टम से बाहर हो जाना, अस्तित्व रहित हो जाना) जैसा है। उद्योग कामधंधे बंद होने का सबसे असरग्रस्त समूह तो यह गरीब वर्ग है जो वहाँ मजदूरी प्राप्त कर भरणपोषण सुनिश्चित करता था, रोज कुआ खोदना, रोज पानी पीने की स्थिति में जीने वाला यह जरूरतमंद समाज टूट सा गया है।

कोरोना महामारी फिर लॉकडाउन ने इस पराधीन बन चुके विचारे दयनीय समाज के सामने यक्ष प्रश्व खड़ा कर दिया है कि कब तक हम आजीविका को लेकर दूसरों पर आश्रित रहें? क्यों न हम कोई ऐसा रास्ता शोधें जिसमें भले कुछ कम मिले लेकिन कहने को कुछ अपना हो, चीजें अपने नियंत्रण में हों, वे उनको अपनी जरूरत के अनुसार संयोजित कर सकें, यह अधिकार आत्मविश्वास आत्म सम्मान उनके पास हो।

स्थानीय लोक संगठन काफी कुछ करने की संभावनाए समेटे होता है। भारतीय संस्कृति साहित्य प्रचलित कहावत है कि **जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना, जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना।।** अर्थात् यदि व्यक्ति तेरा-मेरा, स्वार्थपरता, एक दूसरे को छलने की चातुर्यता (स्मार्टनेस, बुद्धिमत्ता), निहित लोभ को परे रखकर पड़ौसी धर्म व स्वदेशी की भावना के साथ एक दूसरे के हितों का विचार किया जाय तो सभी के अस्तित्व को टिकाए रखने का कोई न कोई स्वाबलंबी रास्ता जरूर निकलकर आयेगा जिसमें सभी का जीवन सुनिश्चित हो सकेगा भले ही उन्हें आंकड़ाकीय दृष्टि से उतनी आर्थिक उपलब्धि न हो किन्तु आत्मसंतुष्टि, संतोष व प्रेम बना रह सकता है। लोग एक दूसरे प्रति संवेदनशील बने, एक दूसरे की मदद के लिए आगे आंए। सामूहिक रूप से मिलकर अकिंचन भाव से ईमानदारीपूर्वक प्रयास करें तो अवश्य ही सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। यह दैवीयवृत्ति है जब हम परस्पर एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करने के लिए आगे आते हैं, सहयोग के लिए तैयार रहते हैं। राम राज्य की तात्विक अनुभूति कराने वाले महाग्रंथ रामायाण से ज्ञात होता है कि जहाँ सभी में दूसरे को देने की ही भावना है, समर्पण व त्याग वहीं सभी के लिए सुख शांति है वहीं महाभारत का युद्ध उस असुरीय वृत्ति का पोषण करता है जिसमें मेरा तो मेरा है ही किन्तु जो तेरा है वह भी मेरा है।

इस आपाधापी की विकारी मनोवृत्ति से बाहर न निकलने वाला समाज सबकुछ होते हुए भी निर्धन व दरिद्र है। यह महज आदर्श नहीं अपितु अन्दर से महसूस की जाने वाली हकीकत है जिसकी सुवास छिपाए नहीं छिपती, कस्तूरी की तरह सर्वत्र फैलती चली जाती है। किसी कवि ने आज की परिस्थिति के इंगित करते हुए सत्य ही कहा है- **कभी अभावों में खुश थी जिंदगी, आज जिंदगी में खुशियों का अभाव है।** इसीलिए गरीबी को सापेक्ष कहा है। माना कि धन जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है लेकिन धन ही सबकुछ नहीं है।

प्रबुद्ध, निष्ठाशील, प्रखर गांधी विचार के अनुयायी कर्मशील विनोबा भावेजी कहते हैं कि धन लक्ष्मी नहीं अपितु घी, दूध, मक्खन, दही आदि खरी लक्ष्मी है, स्थानीय स्तर पर सभी

को सुलभ हो सके यह जरूरी है। प्रेरक शिक्षाप्रद कथानकों में एक प्रसंग आता है कि एक सेठ के पास से कई पीढ़ी बाद लक्ष्मी पलायन करती है, लगाववश वह सेठ को एक वर मांगने को कहती है। सेठ अपनों पुत्रों से सलाह करता है और अंत में सबसे छोटी पुत्रवधु के सुझाव को मान्य रखते हुए लक्ष्मी देवी से सामूहिक प्रेम का वरदान मांग लेता है। इस पर लक्ष्मीजी तथास्तु कहते हुए बताती हैं कि अब मैं चाहकर भी तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकती क्योंकि जहाँ प्रेम है वहीं मेरा वास होता है।

गांधीजी प्रेम की ताकत को समझ चुके थे अनुभव कर चुके थे, कर्मशील, रचनात्मक व स्वाबलंबी अहिंसक समाज रचना के पक्षधर थे इसीलिए उन्होंने ग्राम स्वराज में सहकारिता जैसे घटक को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया, खेती, पशुपालन, ग्रामोद्योग के जरिए अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने से कहीं अधिक जीवन को सुचारु बनाने की कवायद की। सत्य, अहिंसा, प्रेम, हृदय परिवर्तन व सत्याग्रह की बुनियाद समता, समानता व श्रमसाध्यता तथा श्रम को समुचित सम्मान की बात पूरी दृढ़ता से समाज के सामने रखी। उन्होंने आज से लगभग एक शतक से भी पूर्व सर्वोदय व अन्त्योदय की विभावना को साथ ग्राम स्वराज के अभिनव प्रयोग किए और इस निष्कर्ष पर पहुँचे के आर्थिक स्वराज लोकोत्थान के लिए अनिवार्य है जिसका केन्द्रबिन्दु एवं सबसे मुख्य घटक समाज के अंतिम छोर पर रहने वाला व्यक्ति है उसके हितों की रक्षा की भावना के साथ जीविका निर्वाह के जतन को ही ग्राहय माना और इस तत्त्व को ही सच्चे स्वराज की आत्मा कहा तथा इसके लिए जिस तंत्र की समन्वित व संकलित प्रयोगजनित योजना समाज के समक्ष रखी उसे ग्राम स्वराज का नाम दिया जिसमें साधन शुद्धि, श्रमसाधना, स्थानीय जरूरतों के मद्देनजर ऐसे उद्यम जो स्थानीय जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हों जिसमें व्यक्ति व प्रकृति किसी के शोषण को स्थान न हो अपितु वात्सल्यमयी दोहन व्यवस्था का पोषण हो।

गांधीजी द्वारा बताए गए ग्राम स्वराजरूपी तत्त्व व तंत्र में गरीबी निवारण के संपोषीय उपाय समाधान के रूप में प्रकट होते हैं-

गरीबी निवारण हेतु संपोषीय जीवननिर्वाह चक्र का गांधी विचार प्रेरित आधार- स्वदेशी, रचनात्मक श्रमसाध्यता व स्वाबलंबन

⇩

1. आवश्यक ढांचागत सुविधाओं का विकास हो जो शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका
2. स्थानीय औपचारिक-अनौपचारिक संस्थागत संरचना को मजबूत करना
3. लोक संस्था व लोक संगठनों को सक्रिय बनाने हेतु प्रेरणात्मक वातावरण का निर्माण एवं गरीबी निवारण प्रक्रिया में उसका उपयोग
4. खेती-पशुपालन-ग्रामोद्योगों को मददरूप बनाने में संलग्न संस्थाओं को समन्वित कर सिंगल विन्डो सिस्टम की तरह सभी लोगों की पहुँच में हो।
5. डिजिटल टेक्नोलोजी युग में जहाँ आधार कार्ड की सूचनाएं मान्य हैं, को ही आधार मानकर इन गरीबों को हर जगह की हरेक कागजी कार्यवाही से बचाकर उन्हें सीधा लाभान्वित किया जाय। इस सूचना संचार प्रोद्योगिकी के युग में संबंधित अधिकारी व कर्मचारी का ही कर्तव्य हो कि वह आधार से स्वयं सूचनाएँ लेकर योग्य खानापूरी करे, उनका शोषण न करे, उन पर किसी भी प्रकार का दबाव न बनाएं तथा सही मायनों में पारदर्शिता बनाए रखते हुए इस व्यवस्था में हो रहे अनुचित व्यवहारों को रोकें। वे हैरान परेशान न हो अपितु इस व्यवस्था से प्रोत्साहित होकर उपलब्ध विविध विकास लक्षी योजनाओं का समुचित लाभ लेते हुए स्व-रोजगार व उद्यमितता के विकास हेतु प्रेरित होकर आगे आएं और गरीबी के चुंगल से बाहर निकल सकें। ताकि उन्हें एहसास बना रहे कि व्यवस्थाएं उनके लिए हैं, वे व्यवस्था के लिए नहीं।
6. विकास कहीं बाहर से नहीं अपितु उनके अंदर से ही प्रस्फुटित हो सकता है, उन्हें सदैव लेने की भिखारी वृत्ति से बाहर निकालकर आत्मसम्मान व क्षमताओं के प्रति आत्मविश्वास का जज्बा पैदा करें। लगभग 100 वर्ष पूर्व आजादी के पहले के ग्राम विकास के प्रयोग- मार्थान्डम परियोजना के ध्येय वाक्य में कहा गया था कि किसी को मछली देने की बजाय उसे मछली पकड़ने की विधि बता दो तो उकी दरिद्रता का स्थाई समाधान हो जायेगा।

विकास पथ का गांधी मार्ग और आधुनिक जगत की परिस्थिति के साथ सकारात्मक तालमेल को दर्शाते संशोधन अनुभवजन्य घटक

1. खेती के क्षेत्र में पर्यावरणलक्षी जैविक व प्रकृति अनुकूल व्यवस्था को प्रोत्साहन।
2. खेती के आदानों संग्रहण आदि की व्यवस्था में स्वाबलंबन।
3. खेती-पशुपालन के लिए जलसंग्रहण व उपयोग प्रबंधन।
4. हुनरों से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान विज्ञान की पहचान व प्रतिष्ठा दिलाने के उपायों पर बल (गाम की ज्ञान सम्पन्नता व साधन सम्पन्नता का संयोजन)।
5. लोगों की निहित क्षमताओं के उपयोग एवं विकास की समुचित व्यवस्था (कौशल्य वर्धन केन्द्र तथा ग्रामोद्योग या सेवाकीय आजीविका के समुन्नत विकास हेतु विविध सरकारी योजनाओं संस्थाकीय सुविधाओं तक लोगों की सहज पहुँच की सुनिश्चितता)।
6. ग्रामोद्योग, खेत प्रसंस्करण, मूल्य वर्धन की व्यवस्था में स्वदेशी भावना प्रेरित मजबूत उत्पादन श्रंखला का विकास, उपभोग जरूरतों के मध्य सामन्जस्य-उपलब्धता की सुनिश्चितता।
7. बाजारीकरण के दूषणों से मुक्त, शोषणरहित, प्रकृति-पोषित स्थानीय बाजार व्यवस्था की स्थापना जिसका नियमन व नियंत्रण स्थानीय व्यक्ति के हाथ में हो।
8. गरीबी निवारण हेतु आय वृद्धि से अधिक आवश्यक है संपोषित जीवनशैली जिसमें समुचित आरोग्य सुनिश्चित होती है।
9. सार्थक शिक्षा प्रणाली जो लोगों को श्रम से दूर नहीं करती हो और उन्हें सही मायनों में काम का आदमी बनाती हो, उन्हें उनकी जड़ों से जोड़े रखती हो, सामाजिक समरसता पूर्ण सभ्यता के विकास के प्रति संवेदनशील बनाती हो। गांधी इसे बुनियादी शिक्षा के रूप में सामने रखते हैं।
10. जीवन निर्वाह के आजीविका व उपभोग व्यवहारों में संयममय वृत्ति (समाज की मर्यादा सम्पन्नता) के साथ कुदरती संसाधनों का संरक्षण, ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोतों का विकास व उपयोग।

उपसंहार

गांधीजी के ग्राम स्वराज में वर्णित विचारों के आधार तैयार किए मॉडल के आधार पर अंत में यह कहा जा सकता है कि संशोधन क्षेत्र के गरीबों की परिस्थिति को समझते हुए गांधीजी द्वारा ग्रामोत्थान, गरीबों के विकास हेतु ग्राम स्वराज नामक कृति में रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रयुक्ति के माध्यम से जो व्यूहरचना प्रकट की थी वह तब भी प्रासंगिक थी और और आज भी उतनी ही कारगर सिद्ध हो सकती है, इन गरीबी का सम्मानजनक स्थायी समाधान दे सकती है तथा हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने की एक मजबूत कवायद करती है। वस्तुतः आज हमें गरीबी निवारण के लिए जड़ (धन, भौतिक सम्पत्ति) से कहीं अधिक हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहकर जीवन को संवारने की जरूरत महसूस हो रही है जिसे स्थानीय स्वराज के जरिए ही पूरा किया जा सकता है। इस लेख में गांधी विचार के आधार पर स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु जिन क्षेत्रों व मुद्दों को चिन्हित करके जिस सोच को प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष रखा गया है उसकी विश्वसनीयता संदेह से परे है। इसीलिए हमारे प्रधानमंत्रीजी ने भी गांधीविचार के इस तत्त्व को भलीभांति समझकर लीक से परे हटकर स्थानीय विकास को मजबूती प्रदान करने वाली योजनाओं में स्थान दिया भले ही वह स्वच्छता का विषय हो या शौचालय के लिए सोच बदलने की क्रांकिकारी पहल अथवा फिर वह कौशल्य विकास की बात हो या स्थानीय ग्रामोद्योगों व हुनरों को फिर से पुनर्जीवन प्रदान करने की मंशा। उन्होंने जिस तरह से डिजिटल टेक्नोलोजी से इस विचार को आगे बढ़ाने की कवायद की है उन्हीं तथ्यात्मक विचारों के आलोक में गांधी विचार व आधुनिक सूचना संचार टेक्नोलोजी के अनुकूलतम संयोजन के स्वरूप को भी रखने का प्रयास किया है जो इस आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्थानीयता को मजबूत करता है और गरीबी निवारण की समस्या का स्थायी समाधान।

संदर्भ-

1. मगनभाई देसाई- गांधीविचारनुं अर्थशास्त्र, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद (गुजराती)
2. मो.क. गांधी- ग्राम स्वराज, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद (गुजराती)
3. जैन लोकेश, पटेल राजीव एवं कैलाश भोये- संचालकीय अर्थशास्त्र, एग्रोबाइबेट पबव्लिकेशन्स, नई दिल्ली (गुजराती)
4. जैन लोकेश- आदिवासीयों की सम्पोषित आजीविका, एग्रोबाइबेट पबव्लिकेशन्स, नई दिल्ली
5. बनासकांठा विकास वाटिका रिपोर्ट,2019